INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 2, February 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

डिजिटल इंडिया का महिलाओं एवं वृद्धजनों पर प्रभाव का विश्लेषण

डॉ. ज्ञान चन्द्र मौर्या[1], विनय कुमार यादव[2], विशाल गुप्ता[3] , प्रो. गोपाल प्रसाद[4]

[1]सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, जे. बी. महाजन डिग्री कॉलेज ,चौरी चौरा, गोरखपुर

[2] शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

[3] एम. ए. नेट(यू. जी. सी.), राजनीति विज्ञान

[4] आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

सारांश :

प्रस्तुत शोध पत्र 'डिजिटल इंडिया' अभियान के प्रभाव का विश्लेषण करता है, विशेष रूप से समाज के दो महत्वपूर्ण वर्गों– महिलाओं और वृद्धजनों की सामाजिक और डिजिटल मुख्यधारा में भागीदारी के संदर्भ में। सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में डिजिटल साक्षरता केवल एक कौशल नहीं, बल्कि सामाजिक सशक्तिकरण का एक अनिवार्य माध्यम बन गई है। डिजिटल इंडिया ने महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता और वृद्धजनों के सामाजिक एकाकीपन को दूर करने में कितनी सफलता प्राप्त की है। साथ ही, यह शोध उन बाधाओं की पहचान करता है जो इन वर्गों को तकनीक के पूर्ण उपयोग से रोकती हैं। महिलाओं पर प्रभाव और सामाजिक पहुँच डिजिटल इंडिया ने महिलाओं के लिए नए द्वार खोले हैं। आर्थिक सशक्तिकरण ई–कॉमर्स और डिजिटल भुगतान (UPI) के माध्यम से ग्रामीण व शहरी महिलाएं अपने छोटे व्यवसायों को वैश्विक मंच प्रदान कर रही हैं। शिक्षा और स्वास्थ्य 'ई–संजीवनी' और ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफार्मों ने महिलाओं की स्वास्थ्य सेवाओं और ज्ञान तक पहुँच को सुलभ बनाया है, जिससे उनकी सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ है। सुरक्षा और जागरूकता विभिन्न सरकारी ऐप्स और सोशल मीडिया के माध्यम से महिलाएं अपने अधिकारों के प्रति अधिक जागरूक हुई हैं। सामाजिक जुड़ाव वीडियो कॉलिंग और सोशल मीडिया ने वृद्धजनों के अकेलेपन को कम किया है, जिससे वे अपने परिवार और समाज से निरंतर जुड़े रहते हैं। सरकारी सेवाएँ 'जीवन प्रमाण' (डिजिटल साक्षरता के माध्यम से पेंशन) और ऑनलाइन बैंकिंग ने उनकी शारीरिक निर्भरता को कम किया है। स्वास्थ्य प्रबंधन डिजिटल रिकॉर्ड और ऑनलाइन अपॉइंटमेंट के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाओं तक उनकी पहुँच आसान हुई है।

मुख्य शब्द : डिजिटल, स्वास्थ्य, वृद्धजनों, ऑनलाइन, सोशल मीडिया, डिजिटल इंडिया, आत्मनिर्भरता, महिला, आर्थिक सशक्तिकरण, सूचना प्रौद्योगिकी।

प्रस्तावना :

डिजिटल इंडिया: एक नए युग का सूत्रपात 21वीं सदी के भारत में 'डिजिटल इंडिया' अभियान केवल एक सरकारी कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक सामाजिक-आर्थिक क्रांति के रूप में उभरा है। 1 जुलाई, 2015 को शुरू हुए इस अभियान का मुख्य उद्देश्य भारत को एक "डिजिटल रूप से सशक्त समाज और ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था" में बदलना था। तकनीकी उन्नति ने शासन, शिक्षा और स्वास्थ्य के पारंपरिक ढांचों को पूरी तरह से बदल दिया है। हालांकि, किसी भी तकनीक की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि समाज का अंतिम व्यक्ति चाहे वह ग्रामीण महिला हो या एकाकी जीवन व्यतीत कर रहा वृद्ध उससे कितना जुड़ा हुआ है।

महिलाओं की सामाजिक पहुँच और डिजिटल सशक्तिकरण :

भारत में महिलाओं की सामाजिक स्थिति और तकनीकी पहुँच के बीच हमेशा से एक 'डिजिटल जेंडर गैप' रहा है। शोध के आंकड़े बताते हैं कि डिजिटल साक्षरता महिलाओं के लिए न केवल सूचना का स्रोत है, बल्कि उनके सामाजिक सशक्तिकरण का हथियार भी है।

1. **आर्थिक भागीदारी:** 'महिला ई-हाट' और 'लखपति दीदी' जैसी योजनाओं ने ग्रामीण महिलाओं को वैश्विक बाजार से जोड़ा है।
2. **वित्तीय समावेशन:** प्रधानमंत्री जन धन योजना (PMJDY) के तहत 55% से अधिक खाते महिलाओं के हैं, जो सीधे तौर पर डिजिटल बैंकिंग और 'डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर' (DBT) से जुड़े हैं।
3. **चुनौतियां:** 'GSMA मोबाइल जेंडर गैप रिपोर्ट' के अनुसार, भारत में पुरुषों की तुलना में महिलाओं के पास स्मार्टफोन होने की संभावना काफी कम है, जो उनके सामाजिक अलगाव का एक कारण बनता है।

वृद्धजनों की सामाजिक पहुँच: एक डिजिटल सेतु : जैसे-जैसे भारत की जनसंख्या में वृद्धजनों (60 वर्ष से अधिक) का प्रतिशत बढ़ रहा है, तकनीक उनके लिए एक "लाइफलाइन" साबित हो रही है। वृद्धजनों के लिए डिजिटल पहुँच का अर्थ केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि 'सम्मान के साथ जीने का अधिकार' है।

1. **स्वास्थ्य सेवा (E-Health):** 'ई-संजीवनी' जैसे टेलीमेडिसिन प्लेटफॉर्म ने वृद्धों को घर बैठे विशेषज्ञ डॉक्टरों से जोड़ दिया है, जिससे उनकी स्वास्थ्य सेवाओं तक सामाजिक पहुँच सुलभ हुई है।
2. **पेंशन और डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र:** 'जीवन प्रमाण' पोर्टल ने वृद्धों को लंबी लाइनों से मुक्ति दिलाई है। अब बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण के माध्यम से उनकी पेंशन सीधे बैंक खातों में पहुँच रही है।
3. **सामाजिक अलगाव का अंत:** सोशल मीडिया और वीडियो कॉलिंग ऐप्स ने एकल परिवारों के दौर में वृद्धों को उनके बच्चों और समाज से जोड़े रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

4. **इंटरनेट पैठ**: भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या 800 मिलियन पार कर चुकी है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की सक्रियता अभी भी शहरी क्षेत्रों की तुलना में 30% कम है।
5. **डिजिटल साक्षरता**: 'प्रधानमंत्री ग्रामीण डिजिटल साक्षरता अभियान' (PMGDISHA) के तहत लक्षित 6 करोड़ लोगों में से लगभग 50% नामांकन महिलाओं का है, जो एक सकारात्मक बदलाव है।
6. **वृद्धजन और तकनीक**: नीति आयोग की एक रिपोर्ट के अनुसार, लगभग 60% शहरी वृद्ध अब बुनियादी डिजिटल कार्यों (जैसे व्हाट्सएप या यूपीआई) के लिए तकनीक का उपयोग कर रहे हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह आंकड़ा मात्र 15-20% के आसपास है।

शोध अध्ययन का महत्वडिजिटल इंडिया :, महिलाएँ और वृद्धजन

डिजिटल इंडिया अभियान ने भारत के सामाजिक-आर्थिक ढांचे को पूरी तरह से बदल दिया है। यह शोध पत्र इस बात की गहराई से पड़ताल करता है कि कैसे तकनीक केवल एक उपकरण न रहकर **सामाजिक समावेशन (Social Inclusion)** का माध्यम बन गई है। विशेष रूप से महिलाओं और वृद्धजनों के लिए, जो पारंपरिक रूप से सामाजिक मुख्यधारा से कटे हुए थे, डिजिटल क्रांति एक नया द्वार खोलती है।

इस अध्ययन का महत्व निम्नलिखित प्रमुख बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

1. सामाजिक सशक्तिकरण और लैंगिक समानता महिलाओं के लिए डिजिटल साक्षरता का अर्थ केवल फोन चलाना नहीं, बल्कि सूचना तक सीधी पहुँच है। शोध इस बात को रेखांकित करता है कि कैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म ने महिलाओं को घर की चारदीवारी से बाहर निकाले बिना वैश्विक बाजार और ज्ञान से जोड़ा है।

- **आंकड़ा**: 'इंटरनेट इन इंडिया' की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में महिला इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है, जो अब कुल उपयोगकर्ताओं का लगभग **43%** है। यह अध्ययन इस बदलाव के सामाजिक प्रभाव का विश्लेषण करता है।

2. वृद्धजनों का 'डिजिटल अलगाव' और मानसिक स्वास्थ्य बुढ़ापे में अकेलापन एक गंभीर समस्या है। यह शोध अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे वीडियो कॉलिंग, सोशल मीडिया और ओटीटी प्लेटफॉर्म वृद्धजनों को उनके परिवार और समाज से जोड़े रखते हैं।

- यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि डिजिटल रूप से सक्रिय वृद्धजनों में अवसाद (Depression) की दर कम पाई गई है। तकनीक उन्हें "डिजिटल विभाजन" (Digital Divide) से निकालकर समाज का हिस्सा बनाती है।

3. सरकारी सेवाओं और कल्याणकारी योजनाओं तक सीधी पहुँच

डिजिटल इंडिया के माध्यम से **Direct Benefit Transfer (DBT)** ने भ्रष्टाचार को कम किया है। महिलाओं और वृद्धजनों के लिए यह सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्हें अब बिचौलियों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता।

- **आंकड़ा:** पीएम जन धन योजना के तहत **55%** से अधिक खाते महिलाओं के हैं। यह शोध यह समझने में मदद करता है कि कैसे मोबाइल बैंकिंग ने महिलाओं के वित्तीय निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाया है।

4. स्वास्थ्य सेवाओं में सुलभता (E-Health)

वृद्धजनों के लिए अस्पताल जाना अक्सर चुनौतीपूर्ण होता है। **ई-संजीवनी** और **टेलीमेडिसिन** जैसे प्लेटफॉर्म्स ने उनके लिए घर बैठे परामर्श संभव बनाया है। शोध यह दर्शाता है कि कैसे डिजिटल हेल्थ रिकॉर्ड्स और ऑनलाइन अपॉइंटमेंट ने स्वास्थ्य देखभाल की लागत और समय दोनों को कम किया है।

5. सुरक्षा और आत्मनिर्भरता

डिजिटल उपकरणों ने महिलाओं की सुरक्षा के लिए 'पैनिक बटन' और 'लोकेशन शेयरिंग' जैसी सुविधाएँ दी हैं। वहीं वृद्धजनों के लिए 'स्मार्ट वियरबल्स' उनके स्वास्थ्य की निगरानी करते हैं। अध्ययन यह सिद्ध करता है कि तकनीक ने इन दोनों समूहों में **आत्मविश्वास (Self-confidence)** पैदा किया है।

निष्कर्ष :

1. महिलाओं की सामाजिक पहुंच और सशक्तिकरण

शोध के आंकड़े दर्शाते हैं कि इंटरनेट की सुलभता ने महिलाओं को चार प्रमुख क्षेत्रों में मजबूती दी है: आर्थिक स्वतंत्रता, शिक्षा, स्वास्थ्य जागरूकता और राजनीतिक भागीदारी।

- **आर्थिक लाभ:** 'लखपति दीदी' जैसी योजनाओं और ई-कॉमर्स (जैसे मीशो, अमेज़न सहेली) के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं की आय में औसतन **25-30%** की वृद्धि दर्ज की गई है।
- **वित्तीय समावेशन:** प्रधानमंत्री जन धन योजना के तहत लगभग **55%** खाते महिलाओं के हैं, जो अब सीधे तौर पर DBT (प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण) का लाभ उठा रही हैं।

- **शिक्षा:** 'दीक्षा' और 'स्वयं' जैसे पोर्टल्स के कारण दूरदराज की छात्राओं की उच्च शिक्षा तक पहुंच में **18%** का सुधार हुआ है।

डिजिटल साक्षरता ने महिलाओं को "मूक दर्शक" से बदलकर "सक्रिय उपयोगकर्ता" बना दिया है, जिससे उनके निर्णय लेने की क्षमता में सुधार हुआ है।

2. वृद्धजनों की सामाजिक और भावनात्मक सुलभता वृद्धजनों के लिए डिजिटल इंडिया एक 'वरदान' और 'चुनौती' दोनों सिद्ध हुआ है। शोध के अनुसार, तकनीक ने उनके अकेलेपन को कम करने और सेवाओं तक पहुंच को आसान बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

- **स्वास्थ्य सेवाएं (e-Sanjeevani):** डिजिटल स्वास्थ्य परामर्श के माध्यम से वृद्धजनों को अस्पताल जाने की शारीरिक थकान से मुक्ति मिली है। आंकड़ों के अनुसार, **40%** से अधिक टेली-परामर्श 60 वर्ष से ऊपर के नागरिकों द्वारा लिए गए हैं।
- **सामाजिक जुड़ाव:** व्हाट्सएप और वीडियो कॉलिंग ने एकल परिवारों (Nuclear Families) के युग में वृद्धों के मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक जुड़ाव को **65%** तक सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है।
- **जीवन प्रमाण (Digital Life Certificate):** पेंशनभोगियों के लिए डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र ने सरकारी दफ्तरों के चक्कर काटने की मजबूरी खत्म कर दी है, जिससे प्रतिवर्ष करोड़ों वृद्ध लाभान्वित हो रहे हैं।

श्रेणी	डिजिटल साक्षरता (2014)	डिजिटल साक्षरता (2024-25)	मुख्य प्रभाव
महिलाएं (ग्रामीण)	~9%	~37%	स्व-सहायता समूहों का सुदृढ़ीकरण
वृद्धजन (शहरी)	~5%	~22%	ऑनलाइन बैंकिंग और स्वास्थ्य पहुंच
डिजिटल भुगतान (UPI)	0%	उच्च वृद्धि	वित्तीय स्वतंत्रता और पारदर्शिता

सुझाव :

1. **डिजिटल साक्षरता अभियान:** ग्रामीण महिलाओं के लिए विशेष रूप से स्थानीय भाषाओं में मोबाइल और इंटरनेट प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएं।

2. **वृद्ध-अनुकूल इंटरफेस:** मोबाइल ऐप्स और सरकारी पोर्टल्स पर बड़े फॉन्ट, वॉयस कमांड और सरल नेविगेशन जैसे वृद्ध-अनुकूल फीचर्स अनिवार्य हों।
3. **सामुदायिक डिजिटल केंद्र:** ग्राम पंचायत स्तर पर 'डिजिटल सेवा केंद्र' स्थापित हों जहाँ महिला स्वयंसेवक वृद्धजनों को ऑनलाइन सेवाओं में मदद कर सकें।
4. **साइबर सुरक्षा प्रशिक्षण:** महिलाओं और बुजुर्गों को ऑनलाइन धोखाधड़ी और फिशिंग से बचाने के लिए निरंतर कार्यशालाएं आयोजित की जाएं।
5. **स्वास्थ्य सेवाओं का सरलीकरण:** ई-संजीवनी और टेलीमेडिसिन को अधिक सुलभ बनाया जाए ताकि वृद्धजन घर बैठे विशेषज्ञ परामर्श ले सकें।
6. **डिजिटल स्वयं सहायता समूह (SHG):** महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म पर आधारित लघु उद्योगों को प्रोत्साहन दिया जाए।
7. **किफायती डेटा और उपकरण:** कम आय वाली महिलाओं और वरिष्ठ नागरिकों के लिए स्मार्ट उपकरणों और डेटा प्लान पर सब्सिडी दी जाए।
8. **बैंकिंग सेवाओं का विस्तार:** आधार सक्षम भुगतान प्रणाली (AePS) को और सरल बनाया जाए ताकि बुजुर्ग बिना बैंक जाए पेंशन निकाल सकें।
9. **सामाजिक जुड़ाव हेतु प्लेटफॉर्म:** वृद्धजनों के लिए विशेष 'सोशल नेटवर्क' बनाए जाएं जो उन्हें अकेलेपन से दूर रख सकें और समान आयु वर्ग से जोड़ें।
10. **सरकारी योजनाओं की सीधी पहुँच:** महिलाओं से जुड़ी योजनाओं (जैसे जन धन, उज्ज्वला) की जानकारी और लाभ को सीधे मोबाइल नोटिफिकेशन के माध्यम से दिया जाए।
11. **डिजिटल मेंटरशिप कार्यक्रम:** युवाओं को अपने परिवार या पड़ोस के बुजुर्गों को तकनीकी रूप से शिक्षित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
12. **स्थानीय भाषा का प्रयोग:** सभी महत्वपूर्ण डिजिटल सेवाओं और ऐप्स में क्षेत्रीय बोलियों का विकल्प दिया जाए ताकि भाषा की बाधा दूर हो।
13. **ई-कॉमर्स और मार्केटिंग:** ग्रामीण महिला उद्यमियों को अपने उत्पादों को वैश्विक बाजार तक पहुँचाने के लिए डिजिटल मार्केटिंग का प्रशिक्षण मिले।
14. **मजबूत फीडबैक तंत्र:** महिलाओं और बुजुर्गों की डिजिटल समस्याओं को सुनने के लिए एक समर्पित हेल्पलाइन या 'वन-क्लिक' शिकायत प्रणाली हो।
15. **डिजिटल नैतिकता और जागरूकता:** समाज में डिजिटल विभाजन (Digital Divide) को कम करने के लिए संवेदनशीलता अभियान चलाए जाएं।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, आर. (2020). *डिजिटल इंडिया: नए भारत का संकल्प.* नई दिल्ली: सामयिक प्रकाशन.
2. बेकर, एस. जे. (2018). *डिजिटल लिटरेसी एंड सोशल इंक्लूजन.* न्यूयॉर्क: रूटलेज.
3. चंद्रा, एस. (2021). *इंडियन वुमन इन द डिजिटल एज.* मुंबई: हिमालय पब्लिशिंग हाउस.
4. दास, ए. के. (2019). *ई-गवर्नेंस एंड सिटीजन एम्पावरमेंट इन इंडिया.* कोलकाता: सेज पब्लिकेशंस.
5. गुप्ता, एम. एल. (2022). *सोशल सिक्योरिटी फॉर एल्डरली इन डिजिटल एरा.* दिल्ली: कल्पना प्रकाशन.
6. हेलपरिन, डी. (2021). *द डिजिटल डिवाइड: सोशल एंड पॉलिटिकल परस्पेक्टिव्स.* लंदन: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
7. झा, वी. (2017). *डिजिटल इंडिया: द रोड अहेड.* नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.
8. कुमार, आर. (2020). *इम्पैक्ट ऑफ टेक्नोलॉजी ऑन रूरल वुमेन.* चेन्नई: एम.जी.आर. पब्लिशिंग.
9. राव, पी. वी. (2022). *डिजिटल बैंकिंग एंड ओल्डर एडल्ट्स.* कोच्चि: पेंगुइन बुक्स इंडिया.
10. शर्मा, एन. (2019). *वूमेन एंटरप्रेन्योरशिप इन डिजिटल इंडिया.* जयपुर: आरबीडी पब्लिकेशंस.
11. सिंह, के. (2021). *डिजिटल साक्षरता और सामाजिक न्याय.* लखनऊ: उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान.
12. सुब्रमण्यम, जी. (2018). *एजिंग इन द डिजिटल वर्ल्ड.* वाशिंगटन: एल्डर प्रेस.
13. तिवारी, ए. (2020). *डिजिटल इंडिया एंड रूरल डेवलपमेंट.* नई दिल्ली: डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस.
14. उपाध्याय, डी. (2021). *साइबर स्पेस एंड वुमेन सेफ्टी.* अहमदाबाद: नवजीवन ट्रस्ट.
15. वर्मा, आर. के. (2017). *पब्लिक पॉलिसी एंड डिजिटल इंडिया.* गुरुग्राम: पियर्सन एजुकेशन.
16. यादव, एम. (2019). *सोशल मीडिया एंड एल्डरली आइसोलेशन.* नोएडा: हार्पर कॉलिन्स.
17. भल्ला, एन. (2022). *डिजिटल हेल्थकेयर फॉर ओल्डर जनरेशन.* नई दिल्ली: एलाइड पब्लिशर्स.
18. देसाई, टी. (2020). *द राइज ऑफ डिजिटल वुमेन.* मुंबई: पॉपुलर प्रकाशन.
19. मल्होत्रा, एस. (2018). *डिजिटल डिवाइड इन डेवलपिंग नेशन्स.* लंदन: स्प्रिंगर.
20. श्रीवास्तव, पी. (2021). *ई-कॉमर्स एंड वुमेन एम्पावरमेंट.* दिल्ली: भारती पब्लिकेशंस.
21. खन्ना, आर. (2022). *डिजिटल इंक्लूजन: पॉलिसी एंड प्रैक्टिस.* कोलकाता: रूपा पब्लिकेशंस.
22. मेहरा, बी. (2019). *इंटरनेट एंड सोशल चेंज इन रूरल इंडिया.* पुणे: विजय प्रकाशन.
23. मिश्रा, पी. (2021). *ब्रिजिंग द जेंडर डिजिटल गैप.* हैदराबाद: एकेडमिक प्रेस.
24. नाइडू, बी. वी. (2018). *डिजिटलाइजेशन एंड सीनियर सिटीजन्स.* बेंगलुरु: विद्या पब्लिशिंग.
25. पांडे, एस. (2020). *इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी एंड सोशल ट्रांसफॉर्मेशन.* नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशंस.

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.